ब्रह्मज्ञान
अमृत महाकुम्भ

प्रकाशक :
श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान
Shri Prannath Global Consciousness Mission

संपर्क सूत्र :
श्री निजानन्द आश्रम
नेषनल हाइवे नं 8 बाईपास, सयाजीपुरा, वड़ोदरा 390019
Email: premseva7@yahoo.com; manulpdc@yahoo.com
Phones: 989-800-0168, 787-415-1371, 942-736-4535
Website: www.sriprannathji.com

श्री निजानन्द आश्रम
रतनपुरी, जिला मुजफ्फरनगर,उत्तर प्रदेष
Phone : 9811072951

Lord Prannath Divine Center, U.S.A./Canada
8062 Eisenhower Parkway, Lizella, GA 31052-3202
E mail: jagni7@yahoo.com; jagnicorp@yahoo.com
Phones: 011-973-760-9238; 011-478-808-4079
Website: www.nijanand.org

श्री निजानंद आश्रम शमला जी
मेश्वो डेम रोड

श्री निजानंद आश्रम, सढ़ोली
पोस्ट झबरेड़ा, जिला–हरिद्वार, उत्तराखण्ड

मुद्रक :
दर्शन प्रिन्टर्स
5, रघुनाथ हिन्दी हाईस्कूल के सामने
मेम्को–बापुनगर रोड, बापुनगर, अहमदाबाद

अनुक्रमणिका

क्रं.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	ब्रह्मज्ञान की आवश्यकता	6
2.	संसार क्या है ?	7
3.	दुनिया की स्थिति	8
4.	परब्रह्म की खोज	9
5.	तीन पुरूष	10
6.	सृष्टि रचना—— महाकारण	12
7.	ब्रज–मण्डल में परबह्म एवं ब्रह्मप्रियाओं का आगमन	13
8.	रासमण्डल में प्रवेश–कालमाया के ब्रह्माण्ड का लय	14
9.	नित्य वृंदावन	15
10.	अखण्ड बृज–रास	16
11.	कालमाया के ब्रह्माण्ड (ब्रजमण्डल) की पुनः रचना	17
12.	प्रतिबिम्ब (गौलाकी) कृष्ण	17
13.	विष्णु स्वरूप कृष्ण	18
14.	कलियुग में ब्रह्मात्माओं का पुनर्आगमन	18
15.	तीन सृष्टि–ब्रह्मसृष्टी की महिमा	19
16.	बुध निष्कलंक अवतार	20
17.	कयामत–कलियुग का अंतिम समय	22
18.	अखण्ड मोक्ष	22
19.	दिव्य ब्रह्मपुर धाम (परमधाम)	24
20.	परब्रह्म का किशोर युगल स्वरूप	25
21.	साधना	27

भूमिका

अनन्त सृष्टियों के अस्तित्व के जो मूल आधार हैं, सभी आत्माओं के जो एक मात्र स्वामी हैं, सर्व शक्तियों के जो मूल स्त्रोत हैं, ऐसे प्रियतम परमात्मा ही प्राणनाथ हैं। हां जी, हम सभी उस सागर स्वरुप सच्चिदानन्द प्रियतम की आनन्द की लहरें हैं, आत्मायें हैं। आध्यात्मिक मार्ग में इस प्रकार का परस्पर आत्मीयता का भाव केन्द्रीय है। सम्पूर्ण मानव जाति को एकात्म–भाव से, दिव्य प्रेम की तार से जोड़ना ही धर्म का वास्तविक उद्देश्य है।

साथियों! संसारी खेल में प्रियतम प्राणनाथ हमें सत्य और असत्य की पहचान करा कर संसार को एकसूत्र करने हेतु ब्रह्म ज्ञान लेकर पधारे हैं। इसे तारतम वाणी भी इसलिए कहते हैं, क्योंकि यह दिव्य ज्ञान, मोह माया के अज्ञान रुपी अंधकार को चीर कर परम आनन्ददायी दिव्य प्रकाश की ओर ले जाने वाली है।

श्री प्राणनाथ जी (श्री जी) के श्रीमुख से अवतरित यह वाणी श्री कुलजम स्वरुप महाग्रन्थ में समाहित है, जो वर्तमान संसार को मिली हुई अनमोल आध्यात्मिक संपदा है। इसमें संसार के समस्त धर्म ग्रन्थों में निहित आध्यात्मिक ज्ञान को तारतम के मोतियों की माला के रुप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें विशेष रुप से उन अनादि आध्यात्मिक प्रश्नों का जैसे कि– मैं कौन हूँ? कहां से आया हूँ? मेरा प्रियतम कौन है? का निराकरण है। श्री जी फरमाते हैं कि मनुष्य मात्र प्रियतम परमात्मा की आत्म–प्रिया हैं, उनकी आत्म–अंगना हैं। इस भाव को दृढ़ कर लेने से आत्मा, परमात्मा का चरमकक्षा का सुख ले सकती है।

तारतम ज्ञान का इस ब्रह्मांड में अवतरण सन् 1621 ई0 में हुआ, जब परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी दिव्य आवेश स्वरुप से श्री निजानन्द स्वामी धनी श्री देवचन्द्र जी (1581–1654 ई) को दर्शन दिये। वही बीजरुप ज्ञान आगे चलकर श्री कुलजम स्वरुप रुपी वटवृक्ष बन गया, जो आज संसार को सुख शीतलता प्रदान कर रहा है। श्री कुलजम स्वरुप निहित ब्रह्म ज्ञान का अवतरण 1659 ई0 (नौतनपुरी, जामनगर) से 1694 ई0 (पन्ना, म0प्र0) तक 36 वर्ष के अंतराल आत्म–जागृति यात्रा दरम्यान अलग–अलग जगह पर हुआ। इसमें कुल 18,758 चौपाईयां हैं, जो 14 रत्नरुप ग्रन्थों में प्रस्तुत हैं। निज आनन्द (शाश्वत सुख) के पथ पर अग्रसर आत्म खोजी के लिए तो यह

सच्चिदानन्द परब्रह्म अक्षरातीत का ज्ञानमयी स्वरुप ही है।

इस वाणी में जो 'महामति' की छाप है, वह प्रियतम परब्रह्म की महानतम दिव्य शक्तियों का सामूहिक स्वरुप है। मिहिरराज ठाकुर (1618–1694 ई0) जिनका लौकिक नाम है, वे प्रियतम परब्रह्म की मेहर से महामति पद की शोभा प्राप्त करते हैं और इनके तन से परब्रह्म अक्षरातीत की लीला होने से उनकी पहचान करने वाला 'सुन्दरसाथ' समुदाय उन्हें प्राणनाथ के स्वरुप में प्रणाम करता है। जबकि यथार्थ में क्षर पुरुष एवं अक्षर ब्रह्म से परे अक्षरातीत परब्रह्म ही प्राणनाथ हैं।

जामनगर राज्य (गुजरात) में दीवान पद पर आसीन मिहिरराज ने अपने सद्‌गुरु निजानन्दाचार्य श्री देवचन्द्र जी (1581–1654 ई0) की प्रेरणा से भौतिक सुखों को त्याग कर आत्म जागृति अभियान का महा संकल्प लिया। बारह साल की आयु में वे अपने सद्‌गुरु के चरणों में आये और तारतम ज्ञान प्राप्त किया। अद्वैत प्रेम के स्वरुप की पहचान करके स्वयं सेवा, समर्पण और प्रेम की मूर्ति बन गये। आध्यात्मिकता को अपने जीवन के केन्द्र में रख कर ही उन्होनें अपना कुटुम्ब धर्म, समाज धर्म, देश धर्म और मानव धर्म निभाया। उन्होंने मानवतावादी दृष्टि से प्रत्येक मानव में निहित आत्म–चेतना को परमात्म चेतना से जोड़ा। व्यक्ति, समाज, धर्म और विश्व मंच को एक आध्यात्मिक कड़ी से जोड़ा। अतः उनके समन्वयात्मक प्रयासों का और उनकी वाणी का सम्यक मूल्यांकन संकीर्ण सांप्रदायिक परिधि से बाहर होकर ही संभव है।

इसके साथ साथ सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण व्यावहारिक प्रश्नों को भी उन्होंने सुलझाया। वे परिवर्तनकारी सामाजिक क्रान्ति में निमित्त रुप बने। धर्म के नाम पर फैले अंध–विश्वास, अस्पृश्यता, छुआ–छूत, जाति–पाति और ऊँच–नीच के भेदभाव, अहिंसा, विविध प्रकार के व्यसनों में लिप्तता, स्त्री–वर्ग को होने वाले अन्याय, धार्मिक असहिष्णुता, दिखावे मात्र का धर्म पालन, कर्मकांडों की जड़ता, धार्मिक क्षेत्र में बाह्यआडम्बर द्वारा शोषण आदि सामाजिक समस्याओं को सुलझाने का मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने आज से 400 वर्ष पूर्व की रुढ़िग्रस्त मिथ्या मर्यादाओं में जकड़े हुए समाज को नवचेतना प्रदान की, जिसकी आज के सामाजिक जीवन में और भी आवश्यकता है।

भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भी अहिंसा आन्दोलन और चरखे से क्रान्ति की प्रेरणा श्री प्राणनाथ जी के तारतम ज्ञान से अपने बचपन

में अपनी माता जी पुतलीबाई के माध्यम से प्राप्त की। ऐसे विश्व के महान मानवतावादी अनेक विचारकों पर श्री प्राणनाथजी के ज्ञान का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

इस पुष्प में प्रस्तुत दिव्य वाणी की चौपाईयां श्री प्राणनाथ जी के ज्ञान सारभूत रूप प्रकाशित कर रही है।

साथियों! इस तारतम वाणी के बल से ही 1678 ई0 (संवत 1735) में हरिद्वार में महाकुंभ के पर्व पर महामति जी विजयाभिनन्द निष्कलंक बुद्ध के रुप में जाहिर हुए। इतना ही नहीं, मुगल सम्राट औरंगजेब के दरबार में सर्वधर्म समभाव का संदेश लेकर अपने बारह सुन्दरसाथ को भी भेजे। मुगल सम्राट को धर्म का सच्चा स्वरुप बताया और अनेक हिन्दू राजाओं को भी ज्ञान से जाग्रत किया। आखिर उन्हें मिले वीर बुन्देला छत्रसाल (1649–1731 ई0), जिन्होंने उनके संरक्षण में बुंदेलखंड में आदर्श आध्यात्मिक राज्य की स्थापना की और उसकी राजधानी पन्ना शहर (एम0पी0) को वैश्विक आध्यात्मिक चेतना का केन्द्र बनाया।

साथियों! ज्ञान और प्रेम तो बांटने से ही बढ़ता है। अतः आज विश्व भर में करोड़ों लोग इस ब्रह्मज्ञान के मार्गदर्शन में स्वयं आत्मजाग्रति प्राप्त करके संसार को लाभान्वित करने की सेवा कर रहे हैं। श्री प्राणनाथ वैश्विक चेतना अभियान से प्रेरित साथी इसी सद्भावना से आप तक श्री प्राणनाथ वाणी के इस पुष्प को लेकर पहुँचे हैं।

आपका जीवन इस पुष्प की दिव्य खुश्बू से भर जाये और आप स्वयं भी इस महक को फैलाने में जुट जायें, हम यही हार्दिक मंगल कामना करते हैं। आप के आत्मस्वरुप में कोटि–कोटि सप्रेम प्रणाम।

ब्रह्मज्ञान की आवश्यकता

(1) जीव थयो माहे निराकार, ते केणी पेरे बांध्यो बंध।
रूप रंग वाए तेज नहीं, तमे साधो जुओ रे सनंध।। किरंतन 126/76

जीव का स्वरूप तो पांच तत्व से परे निराकार (अत्यंत सूक्ष्म) कहा गया है। उसका ना रूप है ना रंग, वह वायु, अग्नि आदि तत्वों से भी परे है। हे साधूजनों, कृपया विचार कीजिये कि आखिर उसे किस प्रकार का बंधन है। अर्थात् वह किस प्रकार भव बंधन में बंधा हुआ है।

(2) जीव बंधाणो अगनाने, ते अगनान निंद्रा जोर।
जेहेर चढ़यु घेन भोम तणुं,, ते पड़यो तिमिर माहे घोर।। किरंतन 126/77

वास्तव में जीव को बंधन मात्र अज्ञानता का है। इस अज्ञानता रूपी निंद्रा ने ही जीव को माया में भ्रमित किया हुआ है। इस शरीर में आते ही इस मायावी संसार का नशा–जहर चढ़ जाता है और वह स्वयं को जन्म–मृत्यु के बंधन में पाता है।

(3)अटकले ए केम पांमिये पार, ए तो नहीं पंथ प्रपंच मारा संबंधी।
एणे पगले ना पोहोंचाये, जिहां चौकस ना कीजे चित्त मारा संबंधी।।कि.68/1

हे आत्म संबंधीजनों, अटकल (अनुमानित ज्ञान) से किस प्रकार भव से पार हुआ जा सकता है, परब्रह्म की प्राप्ति होना कोई संसारिक कार्यों (प्रपंच) के समान नहीं होता है। जब तक हृदय में सत्य की पहचान पूर्ण रूप से दृढ़ नहीं हो जाती, तब तक परमात्मा एवं मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

(4) आपने ना ओलखे, ना ओलखे परमेश्वर।
तो पार केम पामें, जिहाँ सुध ना पोते घर।। कलश गुजराती 3/8

जब तक अपने आत्मस्वरूप की व निजघर की पहचान ना हो तथा आत्मा के प्रियतम परब्रह्म की पहचान भी ना हो, तब तक भव से पार होना (मोक्ष की प्राप्ति) किस प्रकार सम्भव है।

(5) पेहले आप पेहचानो रे साधो, पेहले आप पेहचानो।
बिना आप चिन्हे पारब्रह्म को, कौन कहे मैं जानो।। किरंतन 1/1

हे साधूजनों, भक्ति साधना में लगने से पहले आप अपने आत्म स्वरूप की तथा आत्मा के प्रियतम उस अक्षरातीत परब्रह्म के स्वरूप की पहचान कीजिये। जब तक यह ज्ञान नहीं हो जाता, तब तक कोई भी भव से पार नहीं हो सकता और ना ही ब्रह्मज्ञानी कहलाने का दावा कर सकता है।

(6)समझे बिना सुख पार को नाहीं, जो उदम करो कई लाख।
तो लों प्रेम ना उपजे पुरा, जो लों अंदर ना देवे साख।। किरंतन 28/16

अपने आत्म स्वरूप, निजघर व आत्मा के प्रियतम परब्रह्म की जब तक पहचान नहीं होगी, तब तक चाहे लाख साधना–भक्ति कर लो, प्रियतम परब्रह्म का अखण्ड सुख नहीं प्राप्त हो सकेगा। जब तक अपनी आत्मा व प्रियतम

परब्रह्म के बीच मूल आत्मिक संबंध की पहचान नहीं हो जाती तब तक हमारे हृदय में अनन्य आत्मिक प्रेम उत्पन्न नहीं हो सकता है।

साथियों! ब्रह्मज्ञान के अतंर्गत मुख्य रूप से निम्न बातें आती हैं,

''यह संसार क्या है (कैसा स्थान है), मैं कौन हूं (मेरी आत्मा का मूलस्वरूप क्या है), मैं इस नश्वर जगत् में कहां से आयी हूं, और मेरी आत्मा का प्रियतम परब्रह्म कहां है और उसका स्वरूप कैसा है।''

इन्हें ही सृष्टि के अनादि प्रश्न कहते हैं।

धर्म प्रेमी सज्जनों! अब हम इस मायावी दुःखरूप संसार एवं आज के समय में दुनिया वालों की स्थिति के विषय में संक्षिप्त विवेचना करेंगे।

संसार क्या है ? एवं दुनिया की स्थिति

(1) **भवसागर जीवन को , किन पाया नहीं पार।**
दुखरूपी अति मोहजल, माहें धखत जीव संसार।।खिलवत 8/42

इस भवसागर रूपी जीवन के रहस्य को अब तक कोई भी नहीं जान पाया। यह मोहसागर (अज्ञानमयी जगत) बहुत ही दुख रूप है। जिसमें दुनिया के प्राणी फंसकर दुखी होते रहते हैं।

(2) **ऐ अंधेरी है विकट , जाहेर रची जमजाल ।**
ऐ पेहले देखावे सुख शीतल, पीछे झाले अगिन की झाल।।किरंतन 33/18

ये मायावी जगत बहुत ही ज्यादा अज्ञानता से परिपूर्ण है। यहां प्रत्यक्ष रूप से यम (विषयसुखों) का जाल बिछा हुआ है। यह पहले तो बहुत सुखरूप प्रतीत होता है। किंतु बाद में बहुत ज्यादा अग्नि में जलाता है। अर्थात् बहुत ज्यादा दुख का कारण बनता है।

(3) **आपको पृथीपति कहावें , ऐसे केते गये बजाये।**
अमरपुर सिरदार कहिये, काल ना छोड़त ताये।।किरंतन 47/3

स्वयं को सर्वश्रेष्ठ कहने वाले ऐसे कितने ही चक्रवर्ती सम्राट आये और चले गये। 14 लोकों में सर्वोपरि बैकुण्ठ का स्वामी कहलाने वाले विष्णु भगवान भी जब काल के आधीन हैं तो सामान्य मनुष्यों की बात ही क्या है।

(4) **तु कहां देखे इन खेल में, ऐ तो पड़यो सब प्रतिबिंब।**
प्रपंच पाँचों तत्व मिल , खेलत सुरत के संग।।किरंतन 7/2

इस मायावी जगत को देखकर आप कहां भ्रमित हो रहे हो, यह तो मात्र प्रतिबिम्ब (चित्र) है, जिसका कोई अस्तित्व नहीं है। पांच तत्व से युक्त ये माया प्रपंच आत्माओं के साथ खेल रहा है।

(5) **ऐ अनमिलती सों न मिलिये, जाको सांचो नहीं संग।**
नहीं भरोसो खिन को , ज्यों रैनि को पतंग।।किरंतन 33/9

इस प्रकार मिल के छूट जाने वाले संसार से दिल ना लगाईये, जिसका साथ

ही सच्चा नहीं है। रात्रि में थोड़े देर के लिये दिखायी देने वाले कीड़े – पतंगा के समान इस शरीर का भी कुछ भरोसा नहीं कि ये कब छूट जाये।

दुनिया की स्थिति

(1) रे हो दूनिया बांवरी, खोवत जनम गंवार।
मदमाती माया की छाकी, सुनत नहीं पुकार।।किरंतन 22/1

यह बांवरी (अज्ञानी) दुनिया अपना मनुष्य जीवन व्यर्थ में गंवाती जा रही है, माया के धन, पद, शक्ति, युवावस्था के नशे में डूबी हुयी है, ब्रह्मवाणी की पुकार भी वे नहीं सुन पा रहे हैं।

(2) देखत काल पछाड़त पल में, तो भी आंख ना खोलें।
आप जैसा कोई और न देखें, मद छाके मुख बोलें।।किरंतन 19/9

प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि मृत्यु एक ही पल में कितनों को बलात् मौत की नींद सुला गयी, फिर भी विवेक चक्षु नहीं खोलते हैं। क्षणिक पद, प्रतिष्ठा, धन, बल, जवानी के नशे में अपने समान और किसी को नहीं देखते, और अहंकार से परिपूर्ण बातें करते हैं।

(3) मानखे देह अखण्ड फल पाईये, सो क्यों पाये के वृथा गमाईये।
ऐ तो अधखिन को अवसर, सो गमावत मांझ नींदर।। किरंतन 3/2

मनुष्य तन एक अनमोल रत्न है, अनेक सत्कर्मों का फल है, इसे पाकर भी पशु के समान मात्र खाने–सोने में व्यर्थ क्यूं गंवाते हो। यह तो मात्र आधे क्षण का अवसर है, जिसे मोह–अज्ञान रूप निंद्रा में गंवाते चले जा रहे हो।

(4) नहीं भरोसो खिन को, बरस मास और दिन।
ऐ तो दम पर बांधिया, तो भी भूल जात भजन।। किरंतन 106/15

इस मनुष्य तन के एक क्षण भर भी बने रहने की निश्चितता नहीं है, तो फिर दिन, महीने और वर्षों की आशा कैसे की जा सकती है। यह शरीर तो श्वासोंश्वास पर ही टिका है, जिसमें से एक श्वांस का भी भरोसा नहीं होता है। फिर भी मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य को भूलकर संसारिक झंझटों में उलझे रहते हैं।

(5) अनेक बार तरफडी मरीने, दुख देखी आव्या छो पार।
लाख चौरासी भमीने आव्या, आहीं मध देश वेपार।। किरंतन 125/4

आपने चौरासी लाख योनियों में अनेकों बार (विभिन्न प्रकार के जीवों के) तन धारण करके, कष्टपूर्वक उनका निर्वाह करके, फिर अंत में तड़प–तड़प के शरीर छोड़ा है और फिर भव से (जन्म–मृत्यु के चक्र से) पार होने के लिये यह अनमोल मनुष्य तन प्राप्त हुआ है।

परब्रह्म की खोज

जब मनुष्य के ह्रदय में वैराग्य एवं आत्मकल्याण की भावना उत्पन्न होती है, तब शुरू होती है– ब्रह्मज्ञान की खोज। किंतु हम आज के परिवेश में देख रहे हैं कि अनेकों धर्म–सम्प्रदाय, मत–पंथ, विचारधारायें संसार में प्रचलित हैं। ऐसी स्थिति में सत्य की खोज एवं विवेचना किस प्रकार की जाये, इस विषय में प्राणनाथ जी कहते हैं :–

(1) पारब्रह्म तो पूरन एक है, ए तो अनेक परमेश्वर कहावें।
अनेक पंथ सब्द सब जुदे जुदे, और सब कोई सास्त्र बोलावें।। कि. 6/7

पूर्ण ब्रह्म परमात्मा तो एक ही होता है, किंतु यहां तो अनेकों इष्ट हैं जो कि परमेश्वर कहलाते हैं। यहां अनेकों पंथ–सम्प्रदाय हैं, सभी की मान्यतायें–सिद्धांत भी भिन्न–भिन्न हैं और उन सबका दावा रहता है कि उनका ही सिद्धांत शास्त्र–सम्मत है।

(2) सत सुपने में क्यों कर आवे, सत सांई है न्यारा।
तुम पारब्रह्म सों परच्या नाहीं, तो क्यों उतरोगे पारा।। किरंतन 32/2

सत्य स्वरूप परब्रह्म इस स्वप्नमयी जगत में नहीं हो सकता, परमेश्वर का दिव्य स्वरूप इस नश्वर जगत से परे है। जब तक सच्चिदानंद परब्रह्म के दिव्य अविनाशी स्वरूप की पहचान ना हो जाये तब तक आप जन्म–मृत्यु के चक्र से परे कैसे हो सकते हो।

(3) काल आवत कबुं ब्रह्म भवन में, तुम क्यों ना विचारो सोई।
अखण्ड सांई जो यामें होता, तो भंग ब्रह्माण्ड को ना होई।। किरं. 32/6

यदि परमात्मा इस नश्वर जगत के कण कण में होता तो ऐसा कैसे सम्भव है कि ब्रह्म के धाम में काल (मृत्यु) का वास हो। ऐसी स्थिति में तो संसार का लय नहीं होना चाहिए था। आप इसका विचार क्यूं नहीं करते ।

(4) कोई कहे ऐ सबे ब्रह्म, तब तो अज्ञान कछुए नाहे।
तो खटशास्त्र हुए काहे को, मोहे ऐसी आवत मन माहे।। किरं. 28/7

यदि कोई कहे कि जो कुछ दिखायी दे रहा है, वह सब ब्रह्म ही है, तो फिर संशय होता है कि षट् शास्त्रों (आदि ग्रंथों) की रचना क्यों की गई है, क्योंकि सभी ब्रह्म हैं तो ब्रह्म तो प्रकिष्ठ ज्ञान स्वरूप होता है।

(5) ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप, जगत असत जड़ दुख को रूप।
किरना सूरज भेद ना आये, माया ब्रह्म बीच बहु भाये।। बीतक 37/41

कोई कहता है कि जिस प्रकार किरणें सूर्य के भीतर ही विराजमान होती हैं उसी प्रकार मायामयी जगत ब्रह्म के अंदर ही विराजमान है। किंतु यहां संशय होता है कि सूर्य और किरणों का स्वरूप तो एक समान होता है। जबकि ब्रह्म और मायामयी जगत में बहुत ही अंतर है। ब्रह्म सच्चिदानंद स्वरूप है और जगत् असत् जड़ दुख का रूप है।

(6) **महाप्रले होसी जब, सगुन ना निरगुन तब।**
निराकार ना सुंन, केहेवे को नाहीं वचन।। खुलासा 11/8

जब क्षर जगत महाप्रलय को प्राप्त हो जाता है, तब ना सगुण (साकार) रहता है ना निर्गुण, निराकार और ना ही शून्य रहता है। उस समय शब्द (सात स्वर) भी शून्य में समाहित हो जाते हैं।

(7) **हारे ढूंढ़ ऊपर तले, खुदा ना पाया किन।**
तब हक का नाम निराकार, कह्या निरंजन सुंन।। खुलासा 12/2

खोजी–जिज्ञासू जनों ने इस क्षर जगत में ऊपर–नीचे (लोकों) सभी स्थानों में परमात्मा की खोज की, किंतु परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो पायी। तब परमात्मा का नाम (स्वरूप) निराकार, निरंजन (अवयव से रहित), शून्य रख दिया।

(8) **जिन सायर खनाए पहाड़ चुनाए, रवि ससि नखत्र फिराए।**
फिरत अहनिस रंग रूत फिरती, ऐसे अनेक वैराट बनाए।। किरं. 4/10

जिस परब्रह्म ने सागर, पर्वत बनाया है। सूर्य, चंद्रमा व सितारों की रचना की है एवं उन्हें गति प्रदान की है। यहां ऋतुऐं क्रमशः बदलती रहती हैं। ऐसे अनेक ब्रह्माण्डों की रचना की है। वह स्वयं निराकार कैसे हो सकता है।

(9) **जिन खिनमें तत्व पाँच समारे, नास करे खिन मांहि।**
ए कहाँ से उपाए कहाँ ले समाए, ऐ विचारत क्यों नाहिं।। किरं. 4/11

जो परमेश्वर एक क्षण मात्र समय में पांच तत्वों से युक्त सम्पूर्ण क्षर जगत् (अनेकों ब्रह्माण्डों) की रचना करता है, एक क्षण में ही उनका लय भी कर देता है, वह स्वयं निराकार कैसे हो सकता है। आप यह विचारते क्यूं नहीं हो कि यह साकार जगत् कहां से उत्पन्न होता है और कहां समाहित (लीन) हो जाता है।

(10) **ब्रह्म नहीं मिने संसार, मन वाचा रही इत हार।**
ढूंढ़या कईयों कई प्रकार, पर चल्या ना आगे विचार।। खुलासा 11/10

वह सच्चिदानंद परब्रह्म इस असत् जड़ दुख रूप क्षर जगत में नहीं है। उसके अद्वैत दिव्य स्वरूप का मनन–चिंतन करने में मन और वर्णन करने में शब्द हार गये। अनेकों जिज्ञासूजनों ने अनेकों तरीके से उनकी खोज की। किंतु वे क्षर अक्षर से परे अक्षरातीत परब्रह्म का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाये।

तीन पुरूष–क्षर, अक्षर एवं अक्षरातीत

तारतम वाणी में आत्मा–परमात्मा का मूल स्वरूप क्षर, अक्षर से परे बताया गया है। आईये इस विषय में हम तारतम वाणी की कुछ मुख्य चौपाईयों का अवलोकन करेंगे।

(1) **हद पार बेहद है, बेहद पार अक्षर।**
अक्षर पार वतन है, जागिये इन घर।। प्रकाश हिंदूस्तानी 31/165

हद (क्षर जगत्) से परे बेहद (चतुष्पाद विभूति) है और बेहद मण्डल से भी परे अक्षर धाम है। अक्षर धाम से भी परे हमारा निजघर परमधाम (रंगमहल) है, जहां मूल मिलावे में हमारे मूल तन विराजमान हैं। (जो कि वहां बैठे–बैठे स्वप्नवत् नश्वर जगत् की लीला देख रहे हैं।) अब अपने निजस्वरूप का स्मरण–ध्यान करते हुए उन मूल तनों में जागृत होईये।

(2) सात लोक तले जिमी के, मृतलोक है तिन पर।
इंद्र रूद्र ब्रह्मा बीच में, ऊपर विष्णु बैकुण्ठ घर।। खुलासा 12/21

हम जिस लोक में रहते हैं उसे मृत्युलोक या भूलोक कहते हैं। इसके नीचे सात लोक हैं, तथा ऊपर 6 लोक हैं। सबसे ऊपर वैकुण्ठ लोक है जिसमें विष्णु भगवान का निवास स्थान है। मृत्युलोक एवं वैकुण्ठ के बीच के लोकों में इंद्र देव, शंकर भगवान एवं ब्रह्मा जी आदि अनेकों देवी–देवताओं का निवास है।

(3) निराकार बैकुण्ठ पर, तिन पर अक्षर ब्रह्म।
अक्षरातीत ब्रह्म तिन पर, यों कहे ईसे का इलम।। खुलासा 12/22

वैकुण्ठ से ऊपर, सम्पूर्ण क्षर जगत् को घेरकर निराकार का आवरण है। निराकार से परे अक्षर ब्रह्म का बेहद मण्डल (चतुष्पाद विभूति) है। इससे भी परे अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य परमधाम है। ऐसा हिन्दू पक्ष के ग्रंथों में वर्णन किया गया है।

(4) सोई अखण्ड अक्षरातीत घर, नित्य बैकुण्ठ मिने अक्षर।
अब यह गुझ करूँ प्रकास, ब्रह्मानन्द ब्रह्मसृष्टि विलास।।प्रकाश हिंदू. 37/9

यह अक्षरातीत परब्रह्म का दिव्य ब्रह्मपुर धाम है। अक्षर ब्रह्म का धाम (नित्य वैकुण्ठ) भी इसी परमधाम में है (किंतु उनकी लीला बेहद मण्डल में होती है।) अब उस दिव्य परमधाम में विराजमान प्रियतम परब्रह्म एवं ब्रह्मप्रियाओं के बीच होने वाली प्रेम व आनंद से परिपूर्ण रहस्यमयी लीलाओं का वर्णन करती हूं।

(5) श्रीराज और स्यामाजी, ए दोनों जुगल किशोर।
रूहें रहें दरगाह में, ए तीनों एक सरूप ना और।। बीतक 69/42

दिव्य परमधाम में युगल किशोर श्री राज–श्यामा जी एवं ब्रह्मप्रियाएं विराजमान हैं। ये तीनों भिन्न–भिन्न नहीं हैं बल्कि एक ही स्वलीला अद्वैत स्वरूप हैं।

(6) अक्षर सरूप के पल में, ऐसे कई कोट इण्ड उपजे।
पल में पैदा करके, फेर वाही पल में खपे।। किरंतन 74/26

अक्षरातीत परब्रह्म के सत् अंग (सत्ता के स्वरूप) अक्षर ब्रह्म के पलक झपकने मात्र समय में ऐसे करोड़ो क्षर ब्रह्माण्ड उत्पन्न होते हैं और फिर उसी पल में ही लय को प्राप्त हो जाते हैं।

(7)और ये तो लीला किसोर, सैंया सुख लेवें अति जोर।
या लीला में सुख केता कहूँ , याको पार परमान ना लहूँ।। परिक्र. 3/100

और परमधाम में परब्रह्म अक्षरातीत एवं उनकी आनंद स्वरूपा आत्माओं की किशोर लीला है। ब्रह्मप्रियाएं उस लीला के द्वारा दिन–रात अनंत आनंद के सागर में झीलना करती हैं। उस ब्रह्मलीला के आनंद का वर्णन किस प्रकार किया जाये, वह तो शब्दातीत व अनंत है।

(8) **छर थी तीत अछर थया, अने अछरातीत केहेवाय।**
आपणने जावूं एणें घरें, इहां अटकले केम पोहोंचाय।।किरंतन 70/5

अर्थात् अक्षर ब्रह्म क्षर जगत् से परे हैं, और उनसे भी परे अक्षरातीत परब्रह्म कहे जाते हैं। हमें अक्षरातीत परब्रह्म के उस दिव्य परमधाम में जाना है, उसका साक्षात्कार करना है, वह अनुमानित संशययुक्त ज्ञान से किस प्रकार सम्भव है।

इस प्रकार हद व बेहद से परे दिव्य परमधाम में आत्मा व परमात्मा के मूल स्वरूप तथा उनके सत् अंग अक्षर ब्रह्म का निर्णय होता है। अब इस विषय में विचार करेंगे कि उस दिव्य परमधाम में ऐसा क्या हुआ, जिस कारण इस नश्वर जगत् की रचना की गई। ब्रह्मात्माओं को इस नश्वर जगत् में आना पड़ा।

सृष्टि रचना— महाकारण

(1) **अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार।**
नाहीं निराकार नाहीं शून्य, ना निर्गुण ना निरंजन।। प्रकाश हिंदू. 37/14

अब सृष्टि रचना के पूर्व के रहस्यों (मूल वचनों) को ध्यान पूर्वक सुनिये। जब ना ही मोह तत्व की उत्पत्ति हुई थी और ना ही अहंकार (एकोऽम् बहुस्याम्) की। उस समय निराकार, शून्य, निर्गुण, निरंजन कुछ भी नहीं था।

(2) **अक्षरातीत के मोहोल में, प्रेम इश्क बरतत।**
सो सुध अक्षर को नहीं, जो किन विध केलि करत।। किरंतन 74/39

अक्षरातीत परब्रह्म के रंगमहल में अनन्य प्रेम (इश्क) व आनंद की लीला होती है। सत्ता के स्वरूप होने से अक्षर ब्रह्म उस किशोर लीला के विषय में कुछ नहीं जानते थे।

(3) **रूहें बेनियाज थीं , बीच दरगाह बारे हजार।**
जानें ना आप अर्श की, साहेबी अपार।। खुलासा 17/46

उसी प्रकार ब्रह्मात्माएं भी अनंत प्रेम व आनंद में दिन रात डूबे रहने की वजह से दिव्य परमधाम की, प्रियतम परब्रह्म की एवं स्वयं की महिमा से अनजान थीं।

(4) **अक्षर मन उपजी ये आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास।।**
तब सखियों मन उपजी ऐह, खेल देखें अक्षर का जेह।प्रकाश हिंदू. 37/18

तब अक्षर ब्रह्म के हृदय में परब्रह्म के प्रेम व आनंद की लीला देखने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है एवं सखियों के मन में अक्षर ब्रह्म की सत्ता (नश्वर जगत्) की लीला को देखने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है।

(5) इत अक्षर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन।
यामें महाविष्णु मन मनथे त्रैगुन, ताथें थिरचर सब उनपन।। प्र. हिं. 37/24

इस मोह सागर में अक्षर ब्रह्म का मन आकर स्वयं को महाविष्णु (आदिनारायण) के रूप में पाता है। उनके संकल्प से 14 लोक व 5 तत्व से युक्त सम्पूर्ण चराचर, त्रिगुणात्मक जगत् की उत्पत्ति होती है।

ब्रज–मण्डल में अक्षरातीत परब्रह्म एवं ब्रह्मप्रियाओं का आगमन

आत्मा परमात्मा का मूल स्वरूप इस नश्वर जगत् में साक्षात् रूप से कभी भी नहीं आ सकता है। श्यामा जी एवं ब्रह्मात्माएं सुरता रूप से एवं परब्रह्म अक्षरातीत जोश (आवेश) के रूप में इस जगत् में आते हैं। आईये! देखते हैं कि सर्वप्रथम परब्रह्म अक्षरातीत इस नश्वर जगत् में कब, कहां व किस प्रकार आये?

(1) अब लों काहूँ ना जाहेर, श्रीधाम के धनी।
खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी।। प्रकाश हिंदूस्तानी 31/13

अब तक संसार में यह रहस्य प्रकट नहीं हो सका था कि आत्माओं के प्रियतम परब्रह्म अक्षरातीत ब्रज मण्डल में अपनी ही प्रियाओं के साथ (क्रमशः कृष्ण एवं गोपियों के तनों में) आये थे और उनके साथ प्रेम व आनंद की लीला की थी। (परब्रह्म की अर्धांगिनी शक्ति श्यामा जी की सुरता ब्रज मण्डल में राधिका जी के तन में आयी)

(2) साथ इच्छाए सुपन में, खेल माहे आया।
बेहद थे पिऊ आये के, बेहद साथ खेलाया।। प्रकाश हिंदूस्तानी 31/14

वे ब्रह्मप्रियाएं दुःख की लीला देखने की इच्छा से इस स्वप्नमयी जगत् में आयीं। दिव्य परमधाम से प्रियतम परब्रह्म आकर अपनी आत्माओं को क्षर जगत् की (सुख–दुख की) लीला दिखाते हैं।

(3) सूरत विष्णु की चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए।
पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत।। प्र. हिंदू. 37/28

कंस के कारागृह में देवकी के गर्भ से जन्म लेकर वसुदेव जी को दर्शन देने वाला चतुर्भुज स्वरूप विष्णु भगववान का था। वसुदेव को सारी बातें समझाकर वह स्वरूप दो भुजा में बदल गया, जिसका विवरण बताती हूं। (विष्णु भगवान अपने जीव का अंश रखकर वैकुण्ठ चले गये थे)

(4) दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अक्षर जोश धनी धाम।
ए खेल देख्या सैंया सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन।। प्र. हिं. 37/30

दो भुजा स्वरूप श्रीकृष्ण जी के तन में अक्षर ब्रह्म की आत्मा एवं अक्षरातीत परब्रह्म का जोश (आवेश) विद्यमान था। (गोपियों के तनों में ब्रह्मप्रियाओं की आत्माएं थीं एवं राधिका जी के तन में परमधाम की श्री श्यामा जी की आत्मा

थी।) ब्रज मण्डल में हम आत्माओ ने अपने प्रियतम श्रीराजजी के साथ अत्यंत प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाऐं कीं।

(5) ज्यों नींद मे देखिये सुपन, यों उपजे हम ब्रजवधु जन।
उपजत ही मन आसा घनी, कब मिलसी हम अपने धनी।। प्र. हिंदू. 37/26

जिस प्रकार नींद की अवस्था में स्वप्न देखा जाता है उसी प्रकार हम ब्रह्मप्रियाओं ने परमधाम मूलमिलावे में बैठे बैठे स्वप्नवत् ब्रजमण्डल में स्वयं को गोपियों के रूप में देखा। वहां गोपियों के तनों में हमारी सुरता के प्रवेश करते ही हमारे मन में अपने प्रियतम धाम धणी से मिलने की तीव्र उत्कण्ठा पैदा हुयी।

(6) धंन गोकुल जमूना त्रट, धंन धंन बृजवासी।
अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी।। प्रकाश हिंदूस्तानी 32/32

वह गोकुल धन्य है, यमूना का तट धन्य है, ब्रज मण्डल में निवास करने वाले सब लोग धन्य हैं, जहां ग्यारह वर्ष तक ब्रह्मलीला होते रही एवं बाद में वह लीला बेहद मण्डल में अखण्ड भी कर दी गयी।

(7)चरनरज ब्रह्मसृष्टि की, ढूंढ़ थके त्रैगुन।
कई विध करी तपस्या, यों केहेवत वेद वचन।। खुलासा 13/55

ब्रज मण्डल में लीला करने वाली ब्रह्मसृष्टियों (गोपियों, ब्रह्मप्रियाओं) की चरण रज को त्रिदेवा भी खोज खोज कर थक गये, उसके लिये उन्होंने कई प्रकार से तपस्या भी किया है, ऐसा हिन्दू धर्मग्रंथ (श्रीमद् भागवत आदि) कहते हैं।

रासमण्डल (योगमाया) में प्रवेश–कालमाया के ब्रह्माण्ड का लय

11 वर्ष एवं 52 दिन तक ब्रज मण्डल में अनेक प्रकार की प्रेम लीलाएं करने के पश्चात् प्रियतम अक्षरातीत ने नित्य वृंदावन में जाकर बांसुरी बजायी तथा ब्रह्मात्माओं को वहां बुला कर अखण्ड रास रचाया। उस समय कालमाया के ब्रह्माण्ड का अकालिक प्रलय हो गया था। इसका प्रमाण यह है कि जब गोपियां बांसुरी की आवाज सुनकर अपने–अपने घरों से निकलकर वन की तरफ भाग निकलीं, उनके घर वालों ने उन्हें रोकने का भी प्रयास किया, किंतु उसके पश्चात् उन्हें कोई भी ढूंढने क्यूं नहीं निकला। उस समय कई गोपियों ने अपना पंचभौतिक तन का त्याग भी कर दिया था, किंतु उनका अंतिम संस्कार करने का भी कहीं वर्णन नहीं आया, क्यूंकि उस समय कालमाया का ब्रह्माण्ड था ही नहीं, तथा रास लीला इस कालमाया के जगत् से परे योगमाया के ब्रह्माण्ड में नित्य वृंदावन में रचायी गयी थी।

(1) अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पहुँचे वृंदावन।
तहाँ जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई।। प्रकाश हिंदू. 37/35

ब्रज मण्डल में ग्यारह वर्ष व बावन दिन की लीला के पश्चात् श्रीकृष्णजी के तन में विराजमान परब्रह्म अक्षरातीत ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में जाकर नये

दिव्य वृंदावन की रचना की एवं नया दिव्य किशोर तन (बांके बिहारी) धारण किया। फिर योगमाया की ही दिव्य बांसूरी बजाकर सखियों को योगमाया के नित्य वृंदावन में बुला लिया। (वहां ब्रह्मात्माओं ने भी नया दिव्य किशोर तन धारण किया)

(2) ए झुठा भवजल अथाह कह्या, ताको पार ना पायो किन क्याहें।
याको गौपदबच्छ कर गोपी निकसी, सो पार जाए मिलिया अखण्ड माहें।। किरंतन 13/18

इस झूठे मायामयी भवसागर को, जिसे सभी महर्षि एवं ज्ञानियों ने अथाह (असीमित) कहा है, आज तक कोई भी पार नहीं कर सका। इसे ब्रज की गोपियों (ब्रह्मात्माओं) ने गाय के बछड़े के पग के गड्ढे के समान सहज ही पार कर दिया और बेहद मण्डल में योगमाया के दिव्य वृंदावन में पहुंच गईं।

नित्य वृन्दावन

वह नित्य वृंदावन इस नश्वर जगत् से परे है, जिसके विषय में कोई विरला ही जाानता है। श्री प्राणनाथ जी इस विषय में कहते हैं:—

(1) एह सरूप ने एह वृंदावन, एह जमुना त्रट सार।
घर थी तीत ब्रह्माण्ड थी अलगो, ए तारतमे कीधो निरधार।। रास 10/36

रास लीला का वह स्वरूप (बांकेबिहारी), वह वृंदावन और यमूनाजी का वह नूरी किनारा, दिव्य परमधाम से भी परे तथा इस क्षर ब्रह्माण्ड से भी अलग (बेहद मण्डल में) है, ऐसा तारतम ज्ञान से निश्चित होता है।

(2) वैष्णवो मोह थकी निध न्यारी दीधी, आपण ने अविनास।
नाम तत्व कह्यु श्रीकृष्णजी, जे रमे अखण्ड लीला रास।। किरंतन 64/7

हे वैष्णवजनों, वल्लभाचार्य जी ने श्रीमद्भागवत की सुबोधिनी टीका में हमें इस मोहमयी जगत् से परे अखण्ड अविनाशी नित्य वृंदावन का धन (ज्ञान) दिया है, जहां श्रीकृष्णजी आज भी अखण्ड रूप से रास की लीलायें कर रहे हैं।

(3) ए पिऊ सरूप नौतन, नौतन सिनगार।
नेह हमारा नौतन, नौतन आकार।। प्रकाश हिंदूस्तानी 31/112

वहां प्रियतम श्री राज ने बांके बिहारी का नवीन दिव्य स्वरूप धारण किया था, वस्त्राभूषणों का श्रृंगार भी नवीनतम था। वहां हमारा प्रेम भी नवीनता लिये हुए था। श्री राजजी एवं हम सब ने योगमाया का नवीन किशोर तन धारण किया था।

(4) ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए।
जल जमुना नौतन, लेहेरा लेवें वनराए।। प्रकाश हिंदूस्तानी 31/113

वहां के वृक्ष भी सुंदर, नये व दिव्यता से युक्त थे। (यह कालमाया का वृंदावन नहीं था)। वहां पर दिव्य सुगंधी से युक्त नवीन ही हवा बह रही थी, जिससे वृक्ष लहरा रहे थे। वहां यमूना जी का जल भी दिव्यता से युक्त नवीन था।

(5) सुगंध बेलियाँ नौतन, जिमी रेत सेत प्रकाश।
नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास।। प्रकाश हिंदू. 31/114

वहां बेल–लताएँ भी दिव्य सुगंधी से युक्त नये थे। वहां जमीन की रेती भी उज्ज्वलता लिये हुए एवं जगमगाती हुई थी। वहां का चंद्रमा भी नवीन, निष्कलंक (धब्बारहित), पूर्ण रूप से प्रकाशमान था।

(6) हेम जवेर के वन कहूँ, तो ए सब झूठी वस्त।
सोभा जो अविनास की, कही ना जाए मुख हस्त।। क. हिंदू. 20/19

यदि वहां के दिव्य अखण्ड वनों को सोने जवाहरात के वृक्षों की उपमा दी जाये, तो भी उनकी शोभा का यथार्थ वर्णन नहीं हो सकता है, क्योंकि सोने जवाहरात तो इस कालमाया की झूठी वस्तुऐं हैं।

अखण्ड बृज–रास

परब्रह्म अक्षरातीत की शक्ति के द्वारा की गई ब्रज व रास लीला आज भी इस नश्वर जगत् से परे बेहद मण्डल में (अक्षर ब्रह्म के हृदय में) अखण्ड है।

(1) कौन तुम कहाँ ते आये, और कहाँ तुमारा घर।
ए कौन भोम और कहाँ श्रीकृष्णजी, पाओगे कौन तर।।किरंतन 12/5

हे संत–ज्ञानी जनों, जरा विचार कीजिये कि आप कौन हैं, (आपका आत्मस्वरूप क्या है), इस जगत् में आप कहां से आये हैं, आपकी आत्मा का अखण्ड निजघर कहां है। यह कैसा नश्वर जगत् है, और श्रीकृष्णजी का अखण्ड स्वरूप (अखण्ड ब्रज–रास) कहां है। उसे आप किस प्रकार प्राप्त कर सकते हो।

(2) बृज अखण्ड ब्रह्माण्ड में हुआ, विचार देखो रे बुधवंत।
एक रंचक ना राखी चौदे लोक की, महाप्रले कह्यो ऐसो अंत।।कि. 13/8

हे ज्ञानी संतजनों, जरा विचार कीजिये कि ब्रज लीला इस नश्वर जगत् में किस प्रकार अखण्ड हो सकती है। श्रीमद्भागवत के अनुसार महाप्रलय में सम्पूर्ण चौदह लोकों का लय हो जाता है। ब्रज लीला तो योगमाया के ब्रह्माण्ड (बेहद मण्डल) में अखण्ड है।

(3) रात बड़ी है रास की, कही सुके और व्यास।
ता बीच लीला अखण्ड, ब्रह्म ब्रह्मसृष्टि प्रकास।।खुलासा 13/43

शुकदेव जी एवं वेदव्यास जी के अनुसार रास की रात्रि अखण्ड व अनंत है। वहां परब्रह्म अक्षरातीत एवं ब्रह्मात्माओं के द्वारा की हुई रास लीला आज भी अखण्ड रूप से चल रही है।

(4) बृज ने रास अखण्ड कहे प्रगट, सो तो नित नित नवले रंग।
एक रंचक रहे जो ब्रह्माण्ड की, तो टीका को होवे रे भंग।।कि. 12/9

ब्रज एवं रास लीला को स्पष्ट रूप से अखण्ड कहा है, जहां पल पल प्रेम व आनंद बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। यदि वे लीलाएं इस मृत्युलोक के ब्रज

मण्डल में अखण्ड कहें तो श्रीमद्भागवत (सुबोधिनी टीका) के 12 वे स्कन्ध में वर्णित 14 लोकों के महाप्रलय में लय हो जाने के कथन से विरोधाभास होता है।

रास लीला के पश्चात् ब्रह्मात्माओं की सुरता एवं परब्रह्म का आवेश परमधाम वापस गया किंतु ब्रह्मात्माओं की दुःख का खेल देखने की इच्छा पूर्ण ना होने से इस मायावी जगत् की पुनः रचना की गई, जो कि दिखने में हुबहु पहले के ब्रह्माण्ड जैसा था। उसमें पहले के समान ही ब्रज मण्डल, कृष्ण, राधिका, गोपियां आदि सब थे किंतु अब पहले के समान राधिका जी के तन में श्यामाजी की आत्मा, गोपियों के तनों में ब्रह्मात्माओं की सुरता एवं कृष्ण के तन में अक्षरातीत का आवेश नहीं था। कृष्ण के तन में मात्र गौलोकी शक्ति विराजमान थी। गोपियों के तनों में वेद ऋचा सखियों की सुरता विराजमान थी।

कालमाया के ब्रह्माण्ड (ब्रजमण्डल) की पुनः रचना

(1) जाने सोई ब्रह्माण्ड, जो खेलत सदाए।
एह ब्रह्माण्ड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए।।प्रकाश हिंदूस्तानी 31/45

नित्य वृंदावन में रास रमण करने के पश्चात् जब ब्रह्मात्माओं की माया जगत् की दुःख लीला देखने की इच्छा पूरी नहीं हुई, तब फिर से कालमाया के ब्रह्माण्ड की रचना की गई। यह कालमाया का नया ब्रह्माण्ड देखने में पहले के कालमाया के ब्रह्माण्ड की तरह ही था, वैसा ही ब्रज मण्डल था, जहां हम आत्माओं ने प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाऐं की थीं।

(2) सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई ब्रजवासी।
रासलीला खेल के, इन आए उलासी।।प्रकाश हिंदूस्तानी 31/44

देखने में बिल्कूल वैसा ही गोकुल, यमूना जी का किनारा था, वैसे ही ब्रज वासी (ग्वाल–बाल, नंदबाबा–यशोदा, गोपियां–कृष्णजी आदि) थे। (प्रातः के समय) ऐसा लग रहा था जैसे कि वे (कृष्ण–गोपियां) रासलीला खेलकर वापस आये हों। (किंतु इन तनों में अब परब्रह्म की शक्ति व ब्रह्मप्रियाओं की आत्माऐं नहीं थीं)

प्रतिबिम्ब (गौलाकी) कृष्ण

(1) दिन अग्यारे ग्वाला भेष, तिन पर नहीं धनी को आवेस।
सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे।। प्र. हिंदू. 37/52

इस नये ब्रह्माण्ड के प्रथम 11 दिनों में, जिसमें से सात दिन गोकुल के और चार दिन मथुरा के होते हैं, श्री कृष्ण जी ग्वाला वेश–भूषा में थे। इन 11 दिनों में श्रीकृष्णजी के तन में परब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी का आवेश नहीं था। (गौलोकी श्रीकृष्णजी की शक्ति से प्रतिबिम्ब लीला होती है।)

(2) वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतारयो भेष किए स्नान।
जब राजबागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम न रह्यो लगार।।
प्र. हिंदू. 37/54

वसुदेव व देवकी को कारागार (जंजीरों) से मुक्त कराते हैं, उग्रसेन का राजतिलक करते हैं। अंत में ग्वाला भेष उतारकर स्नान करते हैं और जैसे ही राजसी वस्त्राभूषणों का श्रृंगार करते हैं, श्री कृष्ण जी के तन से गौलोकी शक्ति भी निकलकर चली जाती है जिससे अब पहले सा बल–पराक्रम नहीं रहता है। (अब श्रीकृष्ण जी के तन में मात्र विष्णु भगवान का जीव बचता है)

सात दिन गोकुल एवं चार दिन मथुरा में लीला करने के पश्चात् कृष्ण जी के तन में से गौलोकी शक्ति भी निकल गयी। उस तन में अब मात्र विष्णु भगवान का जीव रह गया। अब इसके पश्चात् मथुरा से लेकर द्वारिका तक जो भी लीला होती है, वह 16 कला सम्पूर्ण विष्णु भगवान की होती है।

विष्णु स्वरूप कृष्ण

(1) धनुष भान गज मल मारे, तब हुए दिन चार।
पछाड़ कंस वसुदेव छोड़े, या दिन थे अवतार।।कलश हिंदू. 18/19

मथुरा में जाने के पश्चात् श्री कृष्ण जी धनुष तोड़ते हैं, कुवलियापीड़ हाथी एवं चाडूर–मुष्टिक नाम के पहलवानों को मारते हैं, कंस वध करने एवं वसुदेव जी को कारागृह से मुक्त कराने तक मथुरा में कुल 4 दिन होते हैं। इसके पश्चात् (गौलोकी शक्ति निकल जाने से और मात्र विष्णु भगवान का जीव बचने से) वे विष्णु भगवान के अवतार कहे गये हैं।

(2) आए जरासंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्ण को अति चिंता भई।
यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णुमय भये निरधार।।प्र. हिंदू 37/55

जब जरासंध मथुरा पर आक्रमण कर देता है, तब गौलोकी शक्ति के नहीं होने से विष्णु स्वरूप श्रीकृष्णजी युद्ध के विषय में बहुत चिंतित होते हैं, इस प्रकार चिंतन करते हुए उन्हें अपने विष्णु स्वरूप का स्मरण होता है। तब वे वैकुण्ठ से अपना रथ एवं अस्त्र–शस्त्र मंगाते हैं, और जरासंध से युद्ध करते हैं। इस प्रकार श्रीकृष्णजी पूर्णतः विष्णु स्वरूप (सोलह कला सम्पूर्ण) हो जाते हैं।

कलियुग में ब्रह्मात्माओं का पुनर्आगमन

(1) कछू इन विध कियो रास, खेल फिरे घर।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदा कर।।प्रकाश हिंदूस्तानी 1/1

इस प्रकार योगमाया के नित्य वृंदावन में रास लीला करने के पश्चात् हम वापस अपने निजघर (परमधाम) चले गये। किंतु दुःख की लीला देखने की इच्छा पूरी ना होने से इस कालमाया के ब्रह्माण्ड में हमें पुनः आना पड़ा।

(2) रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत।
यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार।।प्र. हि. 37/66

रास लीला के पश्चात् भी संसार रूपी दुख का खेल देखने की चाहना बनी रही, इस कारण 28 वे कलियुग में वे ब्रह्मात्माएं इस जगत् में पुनः अवतरित होती हैं। उनमें से परब्रह्म की आनंद स्वरूपा श्री श्यामा जी की आत्मा मारवाड़ देश में उमरकोट गांव में मतू मेहता जी के घर श्री देवचंद्र जी के तन में अवतरित होती है।

तीन सृष्टि–ब्रह्मसृष्टी की महिमा

(1) शास्त्रों तीनों सृष्ट कही, जीव ईश्वरी ब्रह्म।
तिनके ठौर जुदे जुदे, ऐ देखियो अनुकरम।।किरंतन 73/22

शास्त्रों में तीन प्रकार की सृष्टि का वर्णन है– जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि (हंस) एवं ब्रह्मसृष्टि (परमहंस)। इनके निजधाम भी अलग–अलग हैं। उनका विवरण सुनिये।

(2) ब्रह्मसृष्टी अक्षरातीत से, ईश्वरी सृष्टी अक्षर से।
जीवसृष्टी बैकुण्ठ की, ए जो गफलत में।।खुलासा 13/50

ब्रह्मसृष्टि अक्षरातीत परब्रह्म की अंगरूपा हैं, वे परमधाम से आयी हैं। ईश्वरी सृष्टि अक्षर ब्रह्म की आत्माएं हैं, वे अक्षरधाम से आयी हैं। अज्ञानता में डूबी जीव सृष्टि आदिनारायण जी के संकल्प 'एकोऽम् बहुस्याम्' से उत्पन्न हुयी है। विष्णु भगवान के अंश रूप होने से इनका निजधाम वैकुण्ठ कहा गया है।

(3) ब्रह्मसृष्टी वेद पुरान में, कही सो ब्रह्म समान।
कई विध की बुजरकियाँ, देखो साहेदी कुरान।।किरंतन 72/4

वेदों–पुराणों में ब्रह्मसृष्टियों को परब्रह्म के समान ही महिमावान कहा गया है। कई तरह से उनकी महिमा का वर्णन किया गया है। कुर्आन पाक में भी इसकी साक्षी है। (एकमात्र प्रियतम परब्रह्म–खुदा तआला की चाहत, मुहब्बत, खुदा की सुरत उन ब्रह्मसृष्टियों (मोमिनों) के दिलों में होती है, परमेश्वर की राह में अपना सर्वस्व कुर्बान करने वाले होते हैं)

(4) ब्रह्मसृष्टी सखियाँ धाम की, आईयाँ छल देखन।
जुदे जुदे घर कर बैठियाँ, खेले भुलाए दिया वतन।।किरंतन 77/2

ब्रह्मसृष्टियां परब्रह्म हक तआला की अंगरूपा हैं एवं अनंत प्रेम व आनंद से परिपूर्ण दिव्य परमधाम में रहने वाली हैं। वे इस मायावी नश्वर जगत् की लीला देखने (सुरता रूप से) विभिन्न तनों में आयी हैं और यहां वे अलग अलग घर–परिवार बनाकर बैठ गयी हैं। इस झूठी माया ने उन्हें अपना निजस्वरूप, निजघर भूला दिया है।

(5) हम ब्रह्मसृष्टी आये धाम से, अक्षर खेल देखन।
खेल देख के जागिए, घर असलु अपने तन।।किरंतन 96/8

हम ब्रह्मात्माएं दिव्य ब्रह्मपुर धाम से अक्षर ब्रह्म की प्रकृति की लीला देखने यहां आयी हैं। अब नश्वर दुखरूप खेल से अपना चित्त हटाईये क्योंकि परमधाम मूल मिलावे में अपने मूल तनों में जागृत होने का समय आ गया है।

(6) तीन ब्रह्माण्ड जो अब रचे, ब्रह्मसृष्टी कारन।
आप आये तिन वास्ते, सखी पूरे मनोरथ तिन।।परिक्रमा 2/16

ब्रज, रास व जागनी के ये तीनों ब्रह्माण्ड ब्रह्मसृष्टियों के कारण ही रचे गये हैं। स्वयं परब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी भी उन्ही आत्माओं के वास्ते यहां आये एवं अपनी ब्रह्मप्रियाओं के मनोरथ को पूर्ण किया।

बुध निष्कलंक अवतार

परब्रह्म की आवेश शक्ति जो ब्रज मण्डल में कृष्ण जी के तन में प्रकट हुयी थी। वह इस 28 वे कलियुग में पुनः एक मानव तन, जिसका नाम मिहिरराज ठाकुर था, उसमें बुद्ध निष्कलंक स्वरूप (कल्कि अवतार) के रूप में प्रकट होती है। ब्रजमण्डल में उन्होने प्रेम की बांसुरी बजाकर ब्रह्मात्माओं को बुलाया था, अब वे ही पुनः ब्रह्मज्ञान रूपी बांसुरी बजाकर विभिन्न मानव तनों में प्रकटी ब्रह्मात्माओं सहित सारी दुनिया को जगा रहे हैं। समस्त धर्मग्रंथों के कथनों का रहस्य स्पष्ट कर, उनका एकीकरण करके धार्मिक द्वेष खत्म कर रहे हैं, तथा अखण्ड मोक्ष का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

(1) वेदो कह्या आवसी, बुध ईश्वरों का ईश।
मेट कलजुग असुराई, देसी मुक्त सबों जगदीश।।खुलासा 12/31

वैदिक (हिन्दू) धर्मग्रंथों में कहा गया है कि 28 वे कलियुग के अंतिम समय में ईश्वरों के भी ईश्वर बुध निष्कलंक स्वरूप (कल्कि अवतार) इस जगत् में प्रकट होंगे। वे सारे जगत् के वास्तविक ईश्वर (जगदीश) हैं जो कि तारतम ज्ञान व जाग्रत बुद्धि के द्वारा जगत् से कलियुग का प्रभाव (पाप, बुराई, दुर्बुद्धि) नष्ट करके सारे जगत् को अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे।

(2) बुध नेहकलंक आए के, मार कलजुग करसी दूर।
असुराई सबों मेट के, देसी मुक्त हजुर।। खुलासा 13/52

बुध निष्कलंक स्वरूप परब्रह्म जगत् में आकर कलियुग–दज्जाल का वध करेंगे अर्थात् लोगों के हृदय से बुराईयों का दूर करेंगे, संशय रहित जागृत बुद्धि के द्वारा सबको एक परब्रह्म की पहचान कराके अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगे।

(3) सोले सै लगे रे साका सालवाहन का, संवत सत्रह सै पैतीस।
बैठाने साका विजयाभिनंद का, यों कहे सास्त्र और जोतीस।।कि. 58/18

शास्त्रों एवं भविष्य ग्रंथों के अनुसार शालिवाहन राजा के जब 1600 वर्ष व्यतीत होंगे एवं विक्रमादित्य राजा का संवत् 1735 चल रहा होगा उस समय

जगत् में बुध निष्कलंक स्वरूप प्रकट होंगे एवं उनके नाम से विजयाभिनंद बुध जी की शाका प्रारम्भ होगी। (हरिद्वार में उक्त समय में समस्त धर्माचार्यों ने महामति जी को विजयाभिनंद बुध जी के रूप में स्वीकार किया था, एवं बुधजी की शाका भी प्रारम्भ की थी। आज बुध जी की शाका के 337 वर्ष पूर्ण हो चूके हैं।)

(4) सुनियो दुनिया आखिरी, भाग बड़े हैं तुम।
जो कबुं कानों ना सुनी, सो करो दीदार खसम।।सनंध 33/1

आखिरत के समय दुनिया में जन्म लेने वाले हे मनुष्यों, आप सब बहुत ही सौभाग्यशाली हैं। जिस परब्रह्म के स्वरूप, धाम व लीला के विषय में आपको कभी सुनने को नहीं मिला, अब आकर तारतम ब्रह्मज्ञान से उनकी पहचान कर उन आत्मा के प्रियतम परब्रह्म अक्षरातीत का दीदार कीजिये।

(5) प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्मसृष्टि सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव की, सब आये करो दीदार।।किरंतन 54/2

ब्रह्मात्माओं के प्रियतम प्राणनाथ वे पूर्ण ब्रह्म परमात्मा हम सबके बीच एक मानव तन में प्रकट हो चूके हैं। ईश्वरी सृष्टि एवं जीव सृष्टि, सभी आकर उनका दीदार कीजिये।

(6) अब सो साहेब आईयां, सब सृष्टी करी निरमल।
मोह अहंकार उड़ाए के, देसी सुख नेहेचल।।परिक्रमा 2/12

अब वे सारे जमाने के मालिक, श्री जी साहेब दुनिया में आ चूके हैं एवं अपने तारतम ज्ञान, जाग्रत बुद्धि के द्वारा उन्होंने सारे संशयों को दूर कर सबकी बुद्धि को निर्मल कर दिया है। अब मोह–अहंकार के पर्दे को दूर कर सारी दुनिया को अखण्ड मोक्ष का सुख प्रदान करेंगे।

(7) ऐते दिन त्रैलोक में, हुती बुध सुपन।
सो बुधजी बुध जाग्रत ले, प्रगटे पुरी नौतन।।परिक्रमा 2/11

इतने दिन तक संसार में स्वाप्निक बुद्धि थी, जिससे वे सत्य की पहचान नहीं कर पा रहे थे। अब (संवत् 1678 में) बुद्ध जी, जागृत बुद्धि लेकर नौतनपुरी (जामनगर, गुजरात) में (श्री देवचंद्रजी के मन में) प्रकट होते हैं।

(8) सो बुधजीएं सास्त्र ले, सबही को काढ़्यो सार।
जो कोई सब्द संसार में, ताको भलो कियो निरवार।।किरंतन 52/5

उन बुद्ध जी (श्री देवचंद्र जी ने) ने समस्त शास्त्रों का सार निकालकर अध्यात्म के अनसुलझे रहस्यों का स्पष्टीकरण किया। धर्मग्रंथों का वास्तविक अभिप्राय समझाकर एक सत्य परब्रह्म व आत्मा के निजस्वरूप की पहचान करायी।

(9) रसम करमकाण्ड की, हुती ऐते दिन।
अब ईलम बुधजी के , दई सबों प्रेम लक्षण।।खुलासा 13/65

इतने दिनों तक संसार में कर्मकाण्ड (जप, तप, यज्ञ आदि) का ही प्रचलन था। अब बुध जी ने तारतम ज्ञान के द्वारा (निजस्वरूप की पहचान कराके) प्रेम लक्षणा भक्ति का मार्ग प्रशस्त कर दिया है।

(10) ब्रह्मलीला ढ़ांपी हती, अवतारो दरम्यान।
सो फेर आये के अपनी, प्रगट करी पेहचान।।किरंतन 52/25

ब्रज एवं रास में होने वाली ब्रह्मलीला, विष्णु भगवान के अवतार के रूप में ढप गयी थी। अब पुनः आकर उन्हीं परब्रह्म अक्षरातीत ने अपनी पहचान जाहिर कर दी है कि मैं ही ब्रज व रास लीला में श्रीकृष्णजी के तन में आया था।

कलियुग का अंतिम समय

समान्य रूप से दुनिया वालों में यह मान्यता है कि कलियुग की आयु 4,32,000 वर्ष होती है। इसलिये अभी कलियुग का अंतिम समय बहुत दूर है। किंतु धर्मग्रंथों के गुह्य कथनों से स्पष्ट हो जाता है कि पापों के कारण कलियुग की बहुत सी आयु नष्ट हो जाती है।

(1) कयामत आई रे साथजी, कयामत आई रे।
वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों ना देखो मेरे भाई।।किरं. 104/1

प्रिय आत्मिक साथियों, वेद (हिन्दू) एवं कतेब (कुर्आन–बाईबिल) ग्रंथों में कियामत की जिस मुकद्दस घड़ी (कलियुग के अंतिम समय) की भविष्यवाणी की गई थी, वह समय आ गया है। आप धर्मग्रंथों की उन भविष्यवाणियों का क्यूं विचार नहीं करते हो।

(2) शास्त्रे आवरदा कही कलजुग की, चार लाख बत्तीस हजार।
काटें दिन पापें लिख्या माहें शास्त्रों,सो पाईये अर्थ अंदर के विचार।।कि.58/17

वैसे तो शास्त्रों में कलियुग की उम्र चार लाख बत्तीस हजार वर्ष कही गयी है। लेकिन ग्रंथों में यह भी कहा गया है कि कलियुग की उम्र पापों की वजह कटते जाती है। गहराई से विचार करने पर समझ में आता है कि पापों की वजह से कलियुग की उम्र कम होने के कारण मात्र 5500 वर्ष बचती है। (सूर्य या चंद्रग्रहण के हिसाब से प्रति ग्रहण से 125 वर्ष कम हो जाती है। कलियुग में कुल 3412 ग्रहण पड़ने हैं, जिससे 4,26,500 वर्ष उम्र घट जाती है।)

अखण्ड मोक्ष

धर्मग्रंथों के कथनों के अनुसार ब्रह्मज्ञान के बिना कभी भी मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता है। वह ब्रह्मज्ञान इस 28 वे कलियुग के अंतिम समय में बुद्ध निष्कलंक स्वरूप ने प्रकट किया है, जिसके द्वारा अखण्ड मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो गया है। अब सारी दुनिया अहंकार छोड़कर एक प्रेम व शांति के मार्ग पर अग्रसर हो जायेगी। अखण्ड मुक्ति स्थानों में सबका एक जैसा रहन–सहन, खान–पान

होगा। सभी मिलकर एक परब्रह्म अक्षरातीत की भक्ति करेंगे। आपस में किसी का भी किसी से द्वेष भाव नहीं रहेगा।

(1) निजनाम सोई जाहेर हुआ, जाकी सब दुनी राह देखत।
मुक्त देसी ब्रह्माण्ड को, आये ब्रह्म आतम सत।।किरंतन 76/1

परब्रह्म का स्वरूप, धाम व लीला संबंधित ज्ञान (निजनाम) दुनिया में प्रकट हो गया है, जिसकी सारी दुनिया राह देख रही थी। अब परब्रह्म की अंगरूपा वे सत्य आत्माएं (ब्रह्ममुनि) दुनिया में प्रकट हो चुकी हैं, जो तारतम ज्ञान के द्वारा सारी दुनिया को अखण्ड मोक्ष प्रदान करेंगी।

(2) जात एक खसम की, और ना कोई जात।
एक खसम एक दुनिया, और उड़ गई दूजी बात।।सनंध 34/17

इस तारतम ज्ञान को प्राप्त कर लेने के बाद दुनिया से जाति-पांति का भेदभाव समाप्त हो जायेगा। एक प्रियतम परब्रह्म से सबकी आत्मा का संबंध जुड़ जाने से सब एकमात्र उसी की जाति के हो जायेंगे। सबकी आत्मा का एक ही प्रियतम होगा। सारी दुनिया एक हो जायेगी और मतभेद की सारी दीवार खत्म हो जायेगी।

(3) एक सृष्ट धनी भजन एकै, एक गान एक आहार।
छोड़ के बैर मिले सब प्यार सों, भया सकल में जयजयकार।।कि. 54/12

प्राणनाथ जी की कृपा से उस दिन सारी दुनिया एक हो जायेगी, सबकी आत्मा का प्रियतम परब्रह्म भी एक ही होगा, सब एक ही तरीके से उनकी (प्रेम लक्षणा) भक्ति करेंगे। सभी एक परब्रह्म का ही गुणगान करेंगे। सभी का एक जैसा सात्विक भोजन होगा। आपसी दुश्मनी को भूलकर सभी आपस में प्रेमपूर्वक मिलेंगे। चारों तरफ प्रियतम प्राणनाथ के नाम का ही जय-जयकार होगा।

(4) बाघ बकरी एक संग चरें, कोई ना करे किसी सों बैर।
पशु पंखी सुखे चरें चुगें, छुट गयो सबको जेहेर।।किरंतन 55/20

अखण्ड मुक्ति स्थान (बहिश्तों) में आपसे में इतना प्रेम होगा कि बाघ और बकरी भी एक साथ विचरण करेंगे। कोई भी प्राणी किसी से वैर-हिंसा नहीं करेगा। वहां के दिव्य पशु-पक्षी सुखपूर्वक चरेंगे-चुगेंगे अर्थात् भोजन करेंगे। आपसी ईर्ष्या-द्वेष रूपी जहर सबके दिलों से पूर्णतः निकल जायेगा।

(5) मुक्त दई सब जीवों को, पावें पशु पंखी नर नार।
होसी वैराट धंन धंन, सुख आनंद अखण्ड अपार।।किरंतन 55/24

इस संसार के समस्त जीवों- पशु-पक्षी, नर-नारी आदि सबको अखण्ड मोक्ष की प्राप्ति होगी। इस प्रकार यह जागनी के ब्रह्माण्ड के समस्त जीव धन्य धन्य हो जायेंगे। चारों तरफ अखण्ड आनंद-शाश्वत सुखों का साम्राज्य हो जायेगा।

दिव्य ब्रह्मपुर धाम (परमधाम)

श्री प्राणनाथ जी ने अपनी दिव्य तारतम वाणी में दिव्य परमधाम एवं परब्रह्म के किशोर युगल स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया है।

(1) **ब्रह्म इस्क एक संग, सो तो बसत वतन अभंग।**
ब्रह्मसृष्टि ब्रह्म एक अंग, ए सदा आनंद अतिरंग।।परिक्रमा 1/2

परब्रह्म व इश्क एक ही स्वरूप (एक साथ) होते हैं और वे दिव्य अनादि परमधाम में विराजमान हैं। वहां ब्रह्मसृष्टियां, परब्रह्म के ही अंगरूपा हैं। वहां वे अनंत प्रेम व आनंद में सदैव लीला विहार करते हैं।

(2) **ना होय नया ना पुराना, श्रीधाम इन प्रकार।**
घटे वधे नहीं पत्र एकै, रहे सत सर्वदा सार।।कलश हिंदूस्तानी 23/73

परमधाम की दिव्य भूमिका इस प्रकार की है कि वहां ना कभी कोई वस्तु पुरानी होती है और ना कभी कोई नयी वस्तु पैदा होती है। वहां के नूरमयी वृक्षों से ना एक पत्ता कभी गिरता है और ना पत्तों की संख्या कभी बढ़ती है। हमेशा ही उसी प्रकार दिव्यता और सौंदर्य से युक्त तेजोमयी शोभा दिखायी देती है।

(3) **एक पात बिरिख को ना गिरे, ना खिरे पंखी का पर।**
ना होए नया कछू अर्श में, जंगल या जानवर।।खुलासा 17/9

वहां ना वृक्ष का एक पत्ता कभी गिरता है और ना ही कभी पक्षियों का पंख झड़ता है। वहां कभी किसी नयी वस्तु का सृजन भी नहीं होता है। वहां के नूरमयी वन एवं दिव्य पशु–पक्षी सदैव एकरस एवं नवीन सौंदर्य व आनंद से परिपूर्ण होते हैं।

(4) **खुसबोए जिमी अति उज्जल, ज्यों सोने जवेर दरखत।**
बेसक जंगल जवेर ज्यों, रोसन नूर झलकत।।खिलवत 7/33

वहां की धरती अत्यंत सुगंधित एवं उज्ज्वलता (जगमगाहट) लिये हुए है। वहां के वनों के वृक्ष सोने–जवाहरातों के समान जगमगाते हुए दिखायी देते हैं।

(5) **मेवे चाहिए सो लीजिए, फल फूल मूल पात।**
तित रह्या तैसा ही बन्या, ऐ बका बागों की बात।।खुलासा 5/46

परमधाम के दिव्य बगीचों की यह विशेषता है कि उनसे मेवे, फल, फूल, मूल, पत्ते जो भी लेने की इच्छा है ले लीजिये, लेकिन अगले ही पल आप देखेंगे तो वे सब वृक्षों में पूर्ववत् (पहले जैसे ही) दिखायी देंगे।

(6) **पशु पंखी अति सुंदर, बोलत अमृत रसान।**
सुंदरता केश परन की, क्यों कर करों बयान।।परिक्रमा 5/10

वहां के दिव्य पशु पक्षी अत्यंत सुंदरता से परिपूर्ण हैं, अमृत के समान मधुर वाणी में पिया के गुणगान (स्तुति) करते हैं। उनके नूरमयी शरीरों के बालों–पंखों की सुंदरता का किस प्रकार वर्णन किया जाये ? ऐसा लगता है कि उनके शरीरों में अनेक रंगों के रत्नों से सुंदर चित्रकारी की गई हो।

(7) जिमी चेतन वन चेतन, पशु पंखी सुध बुध।
थिर चर सबे चेतन, याकी शोभा है कई विध।।परिक्रमा 38/30

वहां की धरती भी चेतन है और वृक्ष भी चेतन हैं, वहां के पशु–पक्षियों में भी सब ज्ञान व समझ रहती है। वहां चर (चलायमान), अचर (स्थिर) सभी वस्तुएं चेतन हैं। उनकी शोभा, सुंदरता भी अपरम्पार है।

(8) मोहोल मंदिर सब नूर के, नूर मेहेराब खिड़कियाँ द्वार।
नूर सीढ़ियाँ शोभा नूर की, बीच गिरदवाए नूर झलकार।।परि. 35/20

वहां महल, मंदिर (कमरें) सभी नूरमयी (दिव्य) हैं। महलों में मेहराबें (कमानें), खिड़कियां व दरवाजे भी नूरमयी हैं। वहां के सीढ़ियों की शोभा भी नूरमयी (तेजोमयी, सुंदरता से युक्त) है। बीच में व चारों तरफ रिक्त स्थानों में नूरमयी झलकार (जगमगाहट) दिखायी देती है।

(9) इत खेलत जुत्थ सैंयन, सदा आनंद इन वतन।
मिने राजस्यामाजी दोए, सुख याही आतम सब कोए।।परिक्रमा 3/30

इस दिव्य परमधाम में आनंद ही आनंद है। यहां के महलों, बगीचों, नदियों आदि स्थानों में सखियों (ब्रह्मप्रियाओं) के समूह प्राण प्रियतम श्रीराजश्यामा जी के साथ सदा ही प्रेम व आनंद से परिपूर्ण लीलाएं करते हैं। प्रियतम का प्यार ही सभी आत्माओं का असल सुख है।

(10) सेहेजल सुख तुममे है सदा, अलप नहीं असुख।
तुम सुख का स्वाद लेने, खेल मांग्या दुख।।कलश हिंदूस्तानी 23/21

हमारे दिव्य परमधाम में अनादि काल से ही अनंत सुख–ऐश्वर्य है, अल्प मात्रा में भी दुख नहीं है। दुख के स्वरूप से अनजान होने के कारण हमने दुख जगत् की लीला देखने की इच्छा की, ताकि इसके माध्यम से हमें परमधाम के अखण्ड व अनंत सुखों की महिमा ज्ञात हो सके।

परब्रह्म का किशोर युगल स्वरूप

परब्रह्म का स्वरूप नस नाड़ियों से रहित, त्रिगुणातीत, दिव्य, तेजोमयी किशोर स्वरूप वाला है। दिव्य प्रेम व आनंद से परिपूर्ण है। तारतम वाणी में परब्रह्म के युगल किशोर स्वरूप का विस्तृत वर्णन किया है :–

(1) इन सिंहासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर।
वस्तर भूखन सिनगार, सुंदर जोत अति जोर।। सागर 1/118

दिव्य परमधाम के मूल मिलावे में जगमगाते हुए नूरी सिंहासन पर युगल किशोर श्री राजश्यामाजी विराजमान हैं। उनके नूरी वस्त्रों एवं आभूषणों का श्रृंगार जगमगाता हुआ बहुत ही सुंदर लग रहा है।

(2) हक सुरत अति सोहनी, दोऊ जुगल किसोर।
गौर मुख अति सुंदर, ललित कोमल अति जोर।। सिनगार 21/50

युगल किशोर श्री राज श्यामा जी का स्वरूप अत्यंत सुंदर व आकर्षक है। उनका गोरा मुखारविंद लालिमा लिये हुए एवं अत्यंत कोमल है, जो कि बहुत ही सुंदर लग रहा है।

(3) जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का।
ए सबथें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका।। सागर 5/13

आप ऐसा ना समझिये कि यह किसी सांसारिक मनुष्य के स्वरूप का वर्णन किया जा रहा है। यह तो चितवनि (समाधि) के माध्यम से त्रिगुणातीत नूरी स्वरूप वाले (क्षर अक्षर से परे) अखण्ड अविनाशी परमधाम में विराजमान अक्षरातीत परब्रह्म के दिव्य स्वरूप का वर्णन किया जा रहा है।

(4) नूर को रूप सरूप अनूप है, नूर नैना निलवट नासिका नूर।
नूर श्रवन गाल लाल नूर झलकत, नूर मुख हरवटी नूर अधूर।।कि. 114/1

श्री राज जी का नूरी स्वरूप उपमा से रहित एवं मनोहारी है। उनके नैन भी नूरी हैं, मस्तक एवं नासिका भी नूरमयी हैं। उनके नूरी श्रवणों (कानों) एवं लालिमा से युक्त गालों से नूर झलक रहा है। उनका मुखारविंद, ठुड्डी व होंठ भी नूरी हैं।

(5) जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस।
ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स।। सागर 5/53

प्रियतम अक्षरातीत का स्वरूप इस प्रकार दृष्टिगोचर होता है कि मानो नया यौवन (चढ़ती जवानी) हो। बल्कि अभी भी सौंदर्य में अभिवृद्धि होते जा रही है। इस प्रकार प्रियतम का स्वरूप नित् ही नूरी सौदर्य से युक्त रहता है।

(6) ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूं हीं पेहेने।। सागर 6/27

प्रियतम अक्षरातीत के अंग जिस प्रकार नूरी हैं, उसी प्रकार उनके वस्त्राभूषण भी नूरी ही हैं। श्री राज जी के नूरी अंगों में वे वस्त्राभूषण हमेशा ही शोभायमान रहते हैं। ब्रह्मप्रियाऐं प्रियतम को जिस क्षण में जिस श्रृंगार में देखना चाहती हैं, प्रियतम वैसा श्रृंगार पहले ही धारण किये हुए दिखायी देते हैं।

(7) वस्तर नहीं जो पेहेर उतारिए, ए हक अंग नूर रोसन।
दिल चाह्या रंग जोत पोत, अर्स अंग वस्तर भूखन।। सिनगार 17/12

वास्तव में ये वस्त्र या आभूषण इस मायावी दुनिया के समान नहीं हैं, बल्कि ये प्रियतम अक्षरातीत के अंग का ही नूर हैं। परमधाम के नूरी अंगों में शोभायमान ये वस्त्राभूषण ब्रह्मात्माओं के दिल की इच्छानुसार रंग–रूप एवं जगमगाहट से युक्त दिखायी देते हैं।

(8) वाहेदत का वाहेदत में, वस्तर भूखन पेहेनत।
ए नूर है इन अंग का, ए सुन्य ज्यों ना नासत।। सिनगार 17/67

दिव्य परमधाम की स्वलीलाद्वैत भूमिका में सभी अद्वैत स्वरूप वस्त्राभूषण ही पहनते हैं।(वहां का कण कण सच्चिदानंदमयी है, नूरी है)। ये वस्त्राभूषण

प्रियतम अक्षरातीत श्री राज जी के अंग का ही नूर हैं। इस क्षर जगत् के समान जड़ व नाशवान नहीं हैं।

(9) हाथ न लगे भूखन को , जो दीजे हाथ ऊपर।
चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न अग्या बिगर।।सा. 5/18

यदि प्रियतम के नूरी अंगों में जगमगाते हुए आभूषणों को छूने का प्रयास किया जाता है तो वे हाथों में स्पर्श ही नहीं होते हैं। किंतु रूहों के दिल की इच्छा के अनुसार अनेकों रूप–रंग में वे हमेशा ही दिखायी देते रहते हैं, उनकी इच्छा के बिना अदृश्य नहीं होते हैं।

साधना

परब्रह्म का ऐसा दिव्य ज्ञान पाने के पश्चात् देखा देखी, अंधश्रद्धा से युक्त, दिखावे की भक्ति का कोई स्थान नहीं रह जाता है। धर्म व मोक्ष का आधार है – ज्ञान, विश्वास एवं प्रेम। बिना ज्ञान के विश्वास सिद्ध नहीं होता है और बिना ज्ञान व विश्वास के प्रेम व ध्यान–चितवनी का मार्ग प्रशस्त नहीं होता है। ज्ञान, विश्वास व प्रेम का समन्वयात्मक रूप यह ब्रह्मवाणी ब्रह्मात्माओं के लिये परमधाम का एवं जगत् जीवों के लिये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करने आयी है। आईये देखते हैं कि तारतम वाणी के अनुसार अध्यात्मिक साधना का क्या रूप होना चाहिए।

(1) अंदर नाहीं निरमल, फेर फेर नहावे बाहेर।
कर दिखाई कोट बेर, तोहे ना मिलो करतार।।किरंतन 132/1

मनुष्य अपने हृदय की निर्मलता पर ध्यान नहीं देता अपितु शरीर को शुद्ध करने के लिये पुनः पुनः स्नान करता है। इस तरह से बाहरी दिखावो – आडम्बरों से परमात्मा की प्राप्ति नहीं हो सकती है।

(2) कोई बढ़ाओ कोई मुण्डाओ, कोई खैंच काढ़ो केस।
जो लों आतम ना ओलखी, कहाँ होय धरे बहु भेस।।किरंतन 14/2

चाहे कोई अपने केशों को बढ़ाकर बहुत लम्बा कर लो, चाहे कोई उन्हें बार बार मुण्डाते रहो, या खींचकर जड़ से ही उखाड़ दो। किंतु जब तक अपने आत्मस्वरूप की पहचान ही ना हुई तब तक अनेक प्रकार की वेश–भूषा धारण करने से क्या लाभ होगा।

(3) आगम भाखो मन की परखो, सूझे चौदे भवन।
मृतक को जीवत करो, पर घर की ना होवे गम।।किरंतन 14/10

चाहे आप इतनी सिद्धियां प्राप्त कर लो कि भविष्य की बातें कहने लगो, दूसरों के मन की बात उनके बिना कहे जान जाओ। चौदे लोकों में कहां क्या हो रहा है, सब देखने लगो। यहां तक कि मृत व्यक्ति को भी जीवित कर दो तो भी (परब्रह्म के स्वरूप के ज्ञान बिना) ब्रह्मधाम/अखण्ड मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती।

(4) सात बेर अस्नान करो, पेहनो ऊंन उत्तम कामल।
उपजो उत्तम जात में, पर जीवड़ा ना छोड़े बल।।किरंतन 14/4

चाहे दिन में सात बार स्नान करो, चाहे उत्तम ऊन से बने कम्बल को धारण करो, चाहे उत्तम जाति में आपको जन्म मिल जाये, परंतु जीव अपने बुरे संस्कारों का बल नहीं छोड़ पाता है। (पूर्व संस्कारों के कारण बुरे कार्यों की ओरें प्रवृत्त होता ही रहता है)

(5) सौ माला वाओ गले में, द्वादस करो दस बेर।
जो लों प्रेम ना उपजे पिऊ सों, तो लों मन ना छोड़े फेर।।कि.14/5

चाहे आप गले में सौ माला धारण कर लो, चाहे आप शरीर के बारह अंगों में दस बार तिलक लगाओ। किंतु जब तक प्रियतम परब्रह्म के प्रति हृदय में आत्मिक प्रेम उत्पन्न नहीं होता तब तम मन भटकना (अपनी चंचलता) नहीं छोड़ता है।

(6) उतपन प्रेम पारब्रह्म संग, वाको सुपन हो गयो संसार।
प्रेम बिना सुख पार को नाहीं, जो तुम अनेक करो आचार।।किरं.8/6

जिसके हृदय में परमात्मा के प्रति अनन्य प्रेम उत्पन्न हो जाता है, उसके लिये यह संसार स्वप्नवत् हो जाता है। (वह जीवनमुक्त स्थिति को प्राप्त हो जाता है)। प्रेम के बिना परमात्मा का अखण्ड सुख कभी भी प्राप्त नहीं हो सकता, चाहे हम कितना ही भक्ति का दिखावा कर लें।

(7) पंथ होवे कोट कलप, प्रेम पहुँचावे मिने पलक।
जब आतम प्रेम सों लागी, दृष्ट अंतर तब ही जागी।।परिक्रमा 1/53

वैसे तो साधना के अनेकों मार्ग प्रचलित हैं, जिनसे परमात्मा की प्राप्ति होने में करोड़ों कल्पांत का समय लग जाता है। परंतु अनन्य प्रेम का मार्ग, पलक झपकने मात्र समय में प्रियतम परब्रह्म की प्राप्ति करवा देता है। जब आत्मा प्रियतम अक्षरातीत के प्रेम में डूब जाती है, तब हमारी आत्मिक दृष्टि खुल जाती है।

(8) पतिव्रता पणे सेविये, ना थईये वेश्या जेम।
एक मेलीने अनेक कीजे, तेथी धणवट थाय केम।। किरंतन 128/44

हमें उस अनन्य प्रेम को प्राप्त करने के लिये पतिव्रता साधन (अव्यभिचारिणी भक्ति) अपनाना होगा। एक प्रियतम को छोड़कर अनेक इष्टों की सेवा–पूजा करने से आत्मा के सच्चे प्रियतम परब्रह्म का प्रेम (कृपा) किस प्रकार प्राप्त हो सकेगा।

प्रणाम जी